ग्वार उत्पादन की शस्य तकनीकें

ग्वार लेग्युमिनेसी कुल की, खरीफ ऋतु में उगाई जाने वाली एक वर्षीय दलहनी फसल है। यह प्रमुख रूप से शुष्क व अर्धशुष्क क्षेत्रों में सफलतापूर्वक उत्पादित की जाती है। इससे ग्वार बीज व ग्वार गोंद (ग्वार गम) प्राप्त किया जाता है। ग्वार का पशु आहार व हरी खाद के रुप में भी उपयोग किया जाता है। किसान भाई अधिकाधिक उत्पादन प्राप्त करने के अपने लक्ष्य में अब भी पूर्णतः सफल नहीं हो पा रहे हैं, इसका एक मात्र कारण है कि वे उन्नतशील विधियों को अपनाने में पूर्ण ध्यान नहीं देते। अतः किसान भाईयों द्वारा ग्वार की उन्नत विधियां अपनाकर अधिक उत्पादन के साथ-साथ अच्छा मुनाफा प्राप्त कर सकते हैं।

उन्नत किस्में

अच्छा उत्पादन प्राप्त करने के लिए बीज की बहुत ही महत्वपर्ण भूमिका होती है। बीज की किस्म एवं उसकी गुणवत्ता अच्छी होनी चाहिए। उन्नत किस्मों द्वारा अनाज एवं चारे की अच्छी उपज प्राप्त की जा सकती है।

किस्में

दुर्गा जय, दुर्गापुरा सफेद, मरू ग्वार, आर.जी.सी 936, आर.जी.सी.1002, आर.जी.सी. 1003, आर.जी.सी.1017, आर.जी.सी.1031, आर.जी.सी. 1033, आर.जी.सी.1038 आर.जी.सी. 1055 एवं आर.जी.सी.1066।

खेत की तैयारी

साधारणतः ग्वार की खेती किसी भी प्रकार की भूमि में की जा सकती है, गर्मी के दिनों में एक या दो जुताई करें एवं मानसून की प्रथम वर्षा के साथ एक दो जुताई कर पाटा लगाकर खेत तैयार करें। खेत तैयार करते समय ध्यान रखें कि खरपतवार नष्ट हो जाएं।

भूमि उपचार

भूमिगत कीटों एवं दीमक की रोकथाम के लिये बुवाई से पूर्व क्यूनॉलफॉस डेढ़ प्रतिशत चूर्ण 25 किग्रा. प्रति हैक्टेयर की दर से भूमि में बुवाई से पूर्व मिलाना चाहिये। दीमक का प्रकोप कम करने के लिये खेत की पूरी सफाई जैसे सूखे डंठल आदि इकठ्ठे कर हटा देना, कच्चा खाद का प्रयोग न करना आदि काफी सहायक होते है।

बीज उपचार

अंगमारी रोग की रोकथाम हेतु बुवाई से पूर्व प्रति किलो बीज को 250 पी.पी.एम. (4 लीटर पानी में 1 ग्राम) एग्रीमाईसीन या 100 पी.पी.एम.(10 लीटर पानी में एक ग्राम) स्ट्रेप्टोसाईक्लिन के घोल में उपचारित कर बुवाई करनी चाहिय। बुवाई से पूर्व एक हैक्टेयर के बीज को तीन पैकेट राईजोबियम कल्चर से उपचार कर बोने से उत्पादन में वृद्धि के साथ-साथ उर्वरक लागत कम किया जा सकता है।

बीज एवं बुवाई

ग्वार की बुवाई जुलाई अंत तक कर देना अच्छा रहता है। ग्वार की अकेली फसल हेतु 15-20 किग्रा. बीज प्रति हैक्टेयर बोए। कतार से कतार की दूरी 30 सेमी. व पौधे से पौधे की दूरी 10 सेमी. रखें।

उर्वरक

साधारणतया किसान ग्वार में खाद नहीं देते हैं किन्तु अधिक उपज के लिये 10 किग्रा. नत्रजन व 40 किग्रा. फॉस्फोरस प्रति हैक्टेयर बुवाई के समय ऊर कर देवें। फास्फेट देने से छाछ्या रोग का प्रकोप कम हो जाता है। अंतिम जुताई पर 300 किग्रा. जिप्सम या 40 किग्रा. गंधक प्रति हैक्टेयर खेत की तैयारी के समय ऊर कर देवें।

उत्पादन वृद्धि

ग्वार उत्पादन वृद्धि के लिये थायोयूरिया जैव नियामक का आधा ग्राम 1 लीटर पानी का घोल बनाकर प्रथम छिड़काव बुवाई के 25 दिन बाद तथा दूसरा छिड़काव पुष्पावस्था पर करना चाहिए।

सिंचाई एवं निराई गुड़ाई

ग्वार बोने के 3 सप्ताह बाद, यदि अच्छी वर्षा न हो और संभव हो तो सिंचाई करनी चाहिये। इसके बाद वर्षा न होने पर बीस दिन बाद फिर सिंचाई करें। पहली निराई गुड़ाई पौधों के अच्छी तरह जम जाने के बाद एक माह में ही कर देनी चाहिए। गुड़ाई करते समय ध्यान रहे कि पौधों की जड़ें नष्ट न होने पाएं।

खरपतवार नियंत्रण

खरपतवार नियंत्रण खुरपी और खरपतवारनाशी रसायनों एवं हैण्ड हो आदि से किया जाता है। खरपतवार नियंत्रण के लिए फ्लूक्लोरेलिन (45 ई.सी.) दवा की एक लीटर सक्रिय तत्व प्रति हैक्टेयर (2.2 लीटर दवा) की दर से 800 लीटर पानी में मिलाकर बुवाई के पूर्व छिड़काव कर भूमि में भली भांति मिला देना चाहिए अथवा पेन्डामिथेलीन (30 ई.सी) की 1 लीटर सक्रिय तत्व (3.3 लीटर दवा) को 800 लीटर पानी में मिलाकर बुवाई के तुरन्त बाद (बुवाई के 24 से 48 दिन के अंदर) छिड़काव करना चाहिए।

पौध संरक्षण

मोयला, सफेद मक्खी, हरा तैला: इनके नियंत्रण हेतु मिथाइल डिमेटोन 25 ई.सी. या डायमिथोएट 30 ई.सी. एक लीटर या मैलाथियॉन 50 ई.सी. सवा लीटर अथवा मिथाइल पेराथियॉन 2 प्रतिशत चूर्ण 25 किग्रा. प्रति हैक्टेयर का छिड़काव या भुरकाव करें। आवश्यकतानुसार 15 दिन बाद छिड़काव दोबारा करें।

कातरा

कातरा नियंत्रण हेतु मिथाइल पैराथियॉन 2 प्रतिशत या मैलाथियॉन 5 प्रतिशत चूर्ण का भुरकाव या मिथाईल पैराथियॉन 50 ई.सी. 750 मिली. प्रति हैक्टेयर की दर से छिड़काव करें।

झुलसा

नियंत्रण हेतु 2.5 से 3.0 किलो ताम्रयुक्त फफूंदनाशी का प्रति हैक्टेयर छिडकाव करें व इसके लिसे ब्लाईटोक्स 0.3 प्रतिशत का छिड़काव करें।

छाछ्या

25 किलो गंधक चूर्ण अथवा एक लीटर कैराथेन एल.सी. का प्रति हैक्टेयर की दर से भुरकाव या छिडकाव करें।

पत्ती धब्बा

रोग का प्रकोप होने पर प्रति 100 लीटर पानी में स्टेप्टोसाइक्लिन 10 ग्राम या प्लान्टोमाईसिन 50 ग्राम या एग्रोमाइसिन या पोषामाइसिन 30 ग्राम के हिसाब से छिडकाव करें।

जड़ गलन

यह बीमारी भूमि में पैदा हुई फफूंद के कारण फैलती है। इस बीमारी के कारण पौधे अचानक मर जाते हैं। इस बीमारी की रोकथाम के लिए बीज को कार्बेन्डाजिम की 2.0 ग्राम अथवा मेंकोजेब 3.0 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित कर बोना चाहिए।

कटाई एवं गहाई

किस्मों की अवधि के अनुसार 80 से 120 दिनों में फसल पक जाती है। फसल पक जाने पर काटने में देरी न करें अन्यथा दाने बिखरने का डर रहता है। कटी हुई फसल को सुखा लेवें। फसल की औसत उपज 10 से 14 क्विंटल प्रति हैक्टेयर होती हैं। बीज को भली भांति सूखाकर 9 से 10 प्रतिशत नमी पर भण्डारण करना चाहिए।

+++